

## सनातन नववर्ष के उपलक्ष्य पर

मानक नव अपना लिए, नव संदर्भित बिंदु ।

सविता हुए उपेक्ष्य से नहीं समादृत इंदु ।

भूल चुके उज्जैन को, रहा ग्रीनविच याद ।

अर्द्धरात्रि प्रारम्भ अब हुआ समय का नाद ।

रवि का जब अश्विनी में, होता शुभद प्रवेश ।

तब आता नववर्ष तब, धार भव्यतर वेश ।

सौर सत्य को त्याग कर, मिथ्या ही नववर्ष ।

मना रहे अज्ञानवश, शीत काल में हर्ष ।

उषाकिरण घोषित करे, पुनः दिनोदय काल ।

दिनकर अभिमुख विनत हो, नर कृतज्ञ का भाल ।

जो कुछ है पश्चिम उदित, उसकी वरता भ्रांति ।

आशु त्याज्य अब हो चली, यदि वांछित है क्रांति ।

विमल बुद्धि, हितकर विनय, अनयभीति नय प्रीति ।

वर्धित हों नववर्ष में, पारस्परिक प्रतीति ।

राष्ट्र मान सर्वोच्चता, बने आचरण रीति ।

रहे अप्रतीकृत अब नहीं, रिपु कृत क्षुद्र अनीति ।

भोपाल

- शिव कुमार मिश्र

12-04-2021